माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

O

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील: हाई स्कूल 2009

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड | 4 | 0 | 1 | परीक्षा का विषय Hindi (General)
2. परीक्षा का माध्यम English परीक्षा की दिनांक 19/3/09
3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट **A, B, C**, या **D**) अनिवार्यतः भरें

कोड	सेट
T-1002	-

केन्द्र क्रमांक की सील

केन्द्राध्यक्ष

केन्द्र क्र. 461019

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

[redacted]

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक [redacted] अंकों में)

1	9	4	6	1	8	4	3	8

नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

One	Nine	Four	Six	One	Eight	Four	Three	Eight

[redacted]

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में 7 अंकों में X

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 02 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) ________

नाम S. Rathore पद S.A.

पता / संस्था S.P.V. Shivpuri

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

BSEMP

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

1	3
2	3
3	4
4	4
5	5
6	5
7	6
8	7
9	7
10	[illegible]
कुल प्राप्तांक	

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकाओं व चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है

हस्ताक्षर (परीक्षक) SMT. S. ARMO

परीक्षक क्रमांक 8740230

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

दिनांक.................

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

दिनांक.................

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

③ [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 3 के अंक   कुल अंक

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. (i) तुलसीदास राम-भक्ति शाखा के कवि थे।

(ii) संस्कृति की प्रवृत्ति महाफल देने वाली होती है।

(iii) पीड़ा को दुलारने वाला घनश्याम है।

(iv) 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादन महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किया

(v) 'सिंगार' शब्द का तत्सम रूप श्रृंगार है।

2. (i) होली खेलने के लिए "मीरा" फागुन के कितने दिन मानती है?

उ: चार (4) दिन

(ii) 'सच्ची वीरता' निबन्ध के लेखक कौन है?

उ: अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

(iii) 'जो कम बोलता हो' शब्द-समूह के लिए एक शब्द बताइये

उ: मितभाषी

(iv) 'एक अनार सौ बीमार' का क्या अर्थ है?

उ: सीमित साधन व माँग अधिक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

4

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ = कुल अंक

(v) समयाभाव का बहाना बनाने वाले कहाँ तक नहीं पहुँच पाते हैं?

उ॰ उन्नति के शिखर तक

3.

(i) इस नदी की धार में	दुष्यन्त कुमार
(ii) तुम वही दीपक बनो	दिवाकर वर्मा
(iii) हर्ष, विस्मय, घृणा, खुशी, शोक, करुणा आदि भावों के लिए प्रयुक्त किया जाता है	विस्मयादिसूचक चिन्ह
(iv) मजदूरी और प्रेम	सरदार पूर्णसिंह
(v) क्षणिक का विलोम शब्द है	शाश्वत

B S E M P

4.

(i) 'संस्मरण' में कल्पना तत्व प्रधान होता है [असत्य]

(ii) 'साये में धूप' दुष्यन्त कुमार का गजल संग्रह है [सत्य]

(iii) 'भारतवर्ष मंगलमय हो' इच्छावाचक वाक्य है [सत्य]

(iv) कर्मवीर कविता में 'ओज' गुण है [सत्य]

(v) अर्थ के आधार पर वाक्यों को दस भागों में बाँटा जा

पृष्ठ के अंकों का योग

सकता है [असत्य]

5. (i) 'राष्ट्र संवर्धन' का सबसे प्रबल कार्य है –
— संस्कृति की साधना

(ii) 'तुम्हारी विरासत' कविता का स्वर है: –
— यथार्थवादी

(iii) समास के पद होने चाहिए —
— दो

(iv) "यह कुटुम्ब एक महान वृक्ष है, हम सब इसकी डालियाँ हैं" यह कथन है –
दादाजी का।

(v) 'मजदूरी और प्रेम' निबंध के अनुसार सच्चा आनंद प्राप्त होता है –
— श्रम से।

उत्तर: — कर्मवीर मनुष्य की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं: –

(i) कर्मवीर मनुष्य धीर, वीर व साहसी होते हैं।
(ii) कर्मवीर मनुष्य जो कार्य शुरु करते हैं उसे पूरा भी करते हैं।
(iii) कर्मवीर मनुष्य जंगलो में भी महामंगल कर सकते हैं।

BSEMP

6 [ ] + [ ] = [ ]
योग पूर्व पृष्ठ — पृष्ठ 6 के अंक — कुल अंक

(iv) कर्मवीर मनुष्य अथाह गहरे समुद्र में भी जहाजों का बेड़ा चला देते हैं।

(v) कर्मवीर मनुष्य विशाल पर्वत को काटकर सुंदर सड़क बना देते हैं।

(vi) कर्मवीर मनुष्य विघ्नों को देखकर घबराते नहीं हैं।

(vii) कर्मवीर मनुष्य हर असंभव कार्य को संभव कर दिखाने की क्षमता रखते हैं।

7. उत्तर :— 'बरखा गीत' के कवि रमानाथ अवस्थी हैं। उनके अनुसार वर्षा के आगमन पर धरती में निम्नलिखित परिवर्तन होते हैं :—

(i) गर्मी से झुलसाई हुई धरती को पानी की बूँदों से शांति प्राप्त होती है।

(ii) चारों और हरियाली छा जाती है।

(iii) बाग-बागिचों में पशु-पक्षी सुंदर राग निकालते हैं। पशु-पक्षी की चहचहाहट से मानव के हृदय को शांति मिलती है।

(iv) कोयल की मीठा आवाज सुनाई देती है।

(v) सर्वत्र खुशहाली छा जाती है जिससे मानवीय वातावरण शांत व सुखद रहता है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(7) योग पूर्व पृ. + [ ] पृष्ठ 7 के अंक = [ ] कुल अंक

मध्यप्रदेश

8. उत्तर :— शबरी ने राम व लक्ष्मण का स्वागत निम्न प्रकार से किया :—

(i) शबरी ने राम-लक्ष्मण को अपनी कुटिया में देखकर उसका आदर-सत्कार किया।

(ii) राम व लक्ष्मण को बैठने के लिए मृगमरिचीका बिछाई।

(iii) राम लक्ष्मण को खाने के लिए केल के पत्ते बिछाए।

(iv) केल के पत्ते पर उसने बेर रखकर राम-लक्ष्मण को खाने को दिये।

(v) अहम विह्वलता के कारण शबरी ने राम लक्ष्मण को बेर चाख चखकर दिये।

(vi) बेर देकर अन्य वस्तु की अनुपस्थिति के लिए राम-लक्ष्मण से माफी माँगी।

BSEMP

9. उत्तर :— सम्राट अशोक के चरित्र की विशेषताएँ निम्न है :—

पृ. के अंकों का योग

1) वीर एवं साहसी :— सम्राट अशोक वीर एवं साहसी थे। उन्होंने अपने साहस का परिचय देते हुए

अनेक साम्राज्यों पर विजय प्राप्त कर ली व अनेक राजाओं को अपने अधीन कर लिया था।

ii) दयावान :— सम्राट अशोक मे असीम दया थी कलिंग की महारानी अमिता की बाते सुनकर अशोक दया के सागर में बह गये व उन्होने कलिंग को पुनः अमिता को सौंप दिया।

(iii) कोमल हृदयी :— सम्राट अशोक कोमल हृदयी थे। महारानी अमिता की बातों से प्रभावित होकर उन्होने कलिंग को पुनः अमिता को देकर उसे अपनी गोद में उठा लिया।

(iv) कुशल राजा :— सम्राट अशोक कुशल राजा था उसने अपने साम्राज्य का विस्तार बड़े ही कुशल तरीके से किया था उसने अपनी वीरता व कुशलता का परिचय देते हुए अनेक साम्राज्यों के राजाओं को अपने अधीन कर लिया था।

10 उत्तर :— "विद्या की शोभा अहंकार नहीं विनम्रता है" पंक्ति सार्थक है। मनुष्य चाहे जितना भी ज्ञानी हो पर उसे उसके ज्ञान का घमण्ड नहीं करना चाहिए। अहंकार करने वाले मानव का विकास होना संभव नहीं है। मनुष्य चाहे कितना भी ज्ञाता न हो जाए उसे अपने परिचितों के साथ

BSEMP

9 [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 9 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

शिष्टतापूर्वक व्यवहार करना चाहिए। विद्वान होने पर भी घमण्ड नहीं करना चाहिए। जो व्यक्ति विद्वान होने पर घमण्ड नहीं करता है उसका सर्वत्र आदर सत्कार होता है तथा लोग उसे पसंद करते हैं व उससे विचार-विमर्श करना चाहते हैं। चारो ओर उसकी प्रशंसा की जाती है। इसके विपरीत जो व्यक्ति विद्या विद्वान होने का अहंकार करता है उसका सर्वत्र तिरस्कार होता है तथा लोग उसके समीप आने में संकोच करते हैं। उससे विचार-विमर्श करने में कतराते हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति को दूसरो की सहायता करनी चाहिए व अपने ज्ञान का अहंकार नहीं करना चाहिए।

11. उत्तर :— अरविन्द योगी थे। उनका जन्म 15 अगस्त 1872 को कलकत्ता के एक शिक्षित परिवार में हुआ था। उन्होंने विदेशों में रहकर जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेजी संस्कृत, लेटिन आदि भाषाओं को सीखा। 1905 में बंग-भंग का अरविंद पर बुरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने राजनीति त्याग दी व योग साधना में लीन हो गये। उनकी योग पद्धति की चर्चा सुनकर सन् 1914 में एक फ्रांसीसी महिला मीरा अल्फांसा उनसे मिलने गई। अरविंद उन्हें माँ कहकर पुकारने लगे। नर्मदा नदी के किनारे रंगनाथ ने स्वामी ब्रह्मानंद से अरविंद मिलने गये। स्वामी ब्रह्मानंद का नियम था कि वे लोगों की ओर नहीं देखते थे। परन्तु जब योगी

BSEMP

अरविंद उनके समक्ष गये तो उनके चक्षु कई पलों तक अरविंद की ओर झुकी रही। स्वामी ब्रह्मानंद ने अरविंद को अपनी शिष्य बनाया। अरविंद ने उनके अधीन रहकर आर्य पत्र निकाला व भारतीयों की अंतीम साँसों तक सेवा की। सन् 1950, 4 दिसम्बर को इस दिव्यात्मा का देहांत हो गया।

12 उत्तर :— उपन्यास लिखा गद्य विधा के अंतर्गत आती है। उपन्यास में व्यक्ति के संपुर्ण जीवन को प्रस्तुत किया जाता है। उपन्यास में अनेक खण्ड होते है व उपन्यास की भाषा बड़ी ही रोचक व आश्चर्यजनक होती है। उपन्यास में अनेक चरित्र न होकर कुछ ही पात्र होते हैं व उनके संपुर्ण जीवनचक्र की जानकारी दी जाती है। मुंशी प्रेमचंद को "उपन्यास सम्राट" से विभुषित किया गया है। प्रेमचंद ने अनेक रोचक व मनोरंजक उपन्यास लिखे। उनके प्रमुख उपन्यास निम्नलिखित है :-

(i) गोदान (ii) गबन (iii) कर्मभूमि (iv) रंगभूमि।

13. (क)

(i) अन्धे की लाठी :— एकमात्र सहारा

तात्पर्य :— सोहन के पिता की मृत्यु के बाद अकेली

BSEMP

पृष्ठ के अं

वह ही पूरे परिवार के लिए अन्धे की लाठी था।

(ii) पहाड़ टूट पड़ना :— मुसीबत में फँसना।
वाक्य :— देवव्रत की मृत्यु पर उसके परिवार पर तो जैसे पहाड़ टूट गया था।

(ख) लोकोक्ति का अर्थ :— लोगों में प्रचलित उक्ति को लोकोक्ति कहा जाता है। लोकोक्ति पूर्वकाल में घटित सत्य घटनाओं पर आधारित होती है।
उदाहरण — बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

14. (क)

शब्द	पर्यायवाची
(i) फूल	पुष्प, सुमन
(ii) आकाश	नभ, व्योम

(ख)

शब्द	विलोम
उपकार	अपकार
लाभ	हानि

15. (क)

शब्द	संधि विच्छेद	संधि का नाम
(i) माता - पिता	माता और पिता	
i) सूर्योदय	सूर्य + उदय	स्वर संधि
ii) महात्मा	महान + आत्मा	स्वर संधि

B
I
M
P

[ ]
पृष्ठ के अंकों का योग

(12) [+] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ ... पूर्ण जोड़

ख) शब्द	समास विग्रह	समास का नाम
माता-पिता	माता और पिता	द्वन्द्व समास
रात-दिन	रात और दिन	द्वन्द्व समास

16. उत्तर :- संस्कृति शब्द बड़ा व्यापक है और सांस्कृतिक कार्य बहुत फल देने वाला बड़ा वृक्ष। संस्कृति मनुष्य के मन का मन, प्राणों का प्राण व शरीर का शरीर होती है। संस्कृति लेखक के भूत, वर्तमान व भविष्य, उसके सर्वांगीण विकास का आधार है। संस्कृति का मानव जीवन में बहुत महत्व है। राजनीति के क्षेत्र में इसके इने-गिने पत्ते ही दिखाई देते हैं। या यों कहें कि राजनीति पथ की साधना है व संस्कृति उस पथ का साध्य। संस्कृति जीवन के संवर्धन करने वाले महान वृक्ष की भांति होती है। यों तो संसार में बहुत से स्त्री-पुरुष हैं पर एक जन्म में जो हमारे माता-पिता होते हैं उन्हीं को हम अपनाते हैं व उन्हीं के गुण हममें आते हैं। इसका यह आशय नहीं है कि हम अपने विचारों को संकुचित कर लें। वास्तविकता तो यह है कि जितना अधिक व्यक्ति किसी संस्कृति के मर्म को अपनाता है उसका व्यक्तित्व उतना ही ऊँचा उठकर संसार के अन्य धर्मों, विचारधारा को जानने के लिए अभिलाषी व सामर्थ्य बनता है। भारतीय संस्कृति में अनेक धर्मों व विचारों

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

का मिश्रण है। यहाँ पर विभिन्न पंथ व समुदाय के लोग रहते हैं व अपने अपने धर्म का स्वतंत्रतापूर्वक पालन करते हैं। यहाँ की धरातलीय संरचना के कारण यहां विभिन्न प्रकार के लोग पाये जाते हैं। सभी संप्रदाय के अपने अपने रीति रिवाज हैं व इतनी विभिन्नता के उपरान्त भी यहां के लोगों में भाईचारे, समरसता की भावना पाई जाती है। भारत में अनेकता में भी एकता है। उत्तर में विशाल हिमालय है तो दक्षिण में समुद्र इसके पैरों को पखारता है। विभिन्न प्रकार की नदियाँ यहाँ पाई जाती हैं। यहाँ के नागरिकों में मौलिकता की भावना पाई जाती है। विभिन्न धर्मों के उपरांत भी यहाँ धार्मिक समानता पाई जाती है।

17. क= संदर्भ :— उपरोक्त पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक वासंती भाग 2 से लिया गया है। इस पद्यांश की कवियत्री मीराबाई है।

प्रसंग :— उपरोक्त पद्यांश में मीराबाई ने राम के प्रति अपने अन्तर-भाव को समर्पित किया है व सद्गुरु की महिमा का बखान किया है।

व्याख्या :— मीराबाई कहती हैं कि उन्हें राम रत्न रूपी धन प्राप्त हो गया है। इसे वह स्वयं से कभी अलग नहीं होने देगी। मीराबाई कहती हैं

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

कि उन्हें यह राम रत्न उनके सद्गुरु की कृपा से प्राप्त हुआ है। यह ऐसा धन है जो जन्म जन्मांतर तक चलता है अन्य सभी वस्तुएं सब नष्ट हो जाती है। इसकी विशेषता का गुणगान करते हुए मीराबाई कहती है कि यह धन कोई चुरा नहीं सकता यह तो खर्च करने पर कम भी नहीं होता। इसे खर्च करने पर यह सवा-गुना बढ़ जाता है। मीराबाई कहती है कि सतगुरु की सहायता से मैंने भवसागर से मुक्ति प्राप्त कर ली है। मीरा के प्रभु गिरधर नागर हैं जिसका गुणगान वह बड़े हर्ष व उल्लास से करती है।

18

उत्तर :—

(अ) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक "माँ" है।

(ब) मनुष्य को संसार से माँ परिचित करवाती है क्योंकि माँ को न मानकर संसार को भी न मानना सहज है किन्तु माँ को न मानकर संसार को मानना असंभव है।

(स) माँ व मातृभूमि स्वर्ग से वंदनीय है। कहा गया है — "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

19. उत्तर: —

(अ) उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक "युवक व देश" है।

(ब) युवा वर्ग देश को सौभाग्यशाली बनाते है, देश की समृद्धि निश्चित करते है, युग को नई तस्वीर दे सकते है, शत्रुओं को पराजित कर सकते है।

(स) युवा शत्रुओं को अपने शौर्य व पराक्रम से पराजित कर सकते है। शत्रुओं का कलेजा चीर सकते है।

प्रश्न - 20.

विद्यालय छोड़ने हेतु प्राचार्य को प्रमाण पत्र

P.T.O.

please turn over

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

16 + [ ] = ___

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 16 के अंक | कुल अंक

श्रीमान,

प्रधान प्राचार्य महोदय,
शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,
भोपाल (मध्य प्रदेश)

विषय :— विद्यालय छोड़ने का प्रमाण पत्र प्राप्त करने हेतु आवेदन पत्र।

सेवा में,

सविनय निवेदन है कि मैं आपकी संस्था का कक्षा 10वी का छात्र हुँ। मेरे पिताजी का स्थानान्तरण भोपाल से सीहोर हो गया है। मेरा पुरा परिवार पिताजी के साथ भोपाल से सीहोर जा रहा है। इसी स्थिति में मैं इस विद्यालय से अपनी आगे की पढ़ाई पूर्ण नहीं कर सकता हुँ। अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि आप मेरा विद्यालय छोड़ने का प्रमाण पत्र शीघ्रातिशीघ्र देने की कृपा करें।

धन्यवाद।

भवदीय छात्र
कमलेश भोपाली
कक्षा - दसवी
वर्ग - 'अ'

दिनांक —
19/3/09

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

21

उत्तर :-

पर्यावरण

प्रस्तावना :- हमारे चारो और फैले हुए आवरण को पर्यावरण कहा जाता है। पर्यावरण शब्द दो शब्दों परि + आवरण से मिलकर बना है। अतः हमारे आस - पास उपस्थित सभी घटकों को मिलाकर जो तंत्र बनता है उसे पर्यावरण कहते हैं। पर्यावरण के अंतर्गत नदी, नाले, तालाब, वायु, जल, मिट्टी, पेड़ - पौधे, जीव - जंतु आदी आते है। पर्यावरण मे मनुष्यों के भौतिक सुख - सुविधा के संपुर्ण साधन उपलब्ध रहते है। प्राकृतिक पर्यावरण से मानव को अनेक सुविधाएँ मिलती है। प्राणवायु ~~हवा~~ ऑक्सीजन, जल, भोजन आदी पर्यावरण से ही प्राप्त होता है। जंगल विभिन्न प्रकार के जीव - जंतुओं का आश्रय स्थल भी होता है। वनो का वातावरण शांत होता है। आज मानवीय स्वार्थ व लिप्सा से पर्यावरण में खतरा उत्पन्न हो गया है। इसे पर्यावरण प्रदूषण की संज्ञा दी जाती है। इसके कारण विभिन्न जीव - जंतुओं के आवास नष्ट हुए हैं व पर्यावरण में असंतुलन उत्पन्न हो गया है। इसी स्थिति मे विभिन्न जीव - जन्तुओं का प्राकृतिक आवास समाप्त हो गया है जिससे अनेक प्रकार के जीवो की अनेक दुर्लभ प्रजातियां लुप्त हो गई है। अतः पर्यावरण संरक्षण बहुत आवश्यक है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

पर्यावरण की उपयोगिता :— किसी भी जीव के विकास के लिए उसके पर्यावरण का होना आवश्यक है। पर्यावरण के अभाव में जीव जंतु का संतुलित विकास संभव नहीं है। जीव जंतु अपने आवास, भोजन आदि के लिए पर्यावरण पर आश्रित रहते हैं। पर्यावरण से जीव-जन्तुओं को प्राणवायु ऑक्सीजन मिलती है, भोजन के रूप में विभिन्न खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं आवास के लिए जंगल व घोंसले रहते हैं। पर्यावरण से मानव को भी बहुत सहायता होती है। उसके औद्योगिक, सामाजिक व भौतिक विकास में पर्यावरण बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। पर्यावरण से मानव को विभिन्न कच्चा माल प्राप्त होता है जिसका प्रयोग कर वह विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन करता है। पर्यावरण से नागरिक एक दूसरे के समीप आते हैं व उससे सामाजिकता बढ़ती है व सामाजिकता का विकास मानव की पूर्णता का आधार समझा जाता है। पर्यावरण से मानव को अनेक प्रकार के भौतिक साधन प्राप्त होते हैं। पर्यावरण के कारण ही विभिन्न जीवों के मध्य पारिस्थितिक तंत्र चलता रहता है। पर्यावरण से मानव खनिज पदार्थ, फल-फूल, कंद-मूल आदि का उपयोग कर अपनी उन्नति करता है तथा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

पृष्ठ के अंकों का योग

प्राकृतिक पर्यावरण में मानवीय हस्तक्षेप:— पर्यावरण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की दृष्टि से मानव ने पर्यावरण का असीमित विदोहन किया है। इस प्रकार अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए मानव ने पर्यावरण को बहुत हानि पहुँचाई है। पर्यावरण के इस विदोहन के कारण अनेक ज्वलन्त समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं व उनका सामना संपूर्ण प्राणी जगत को करना पड़ता है। मानव ने अपने औद्योगिक क्षेत्र का विकास करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का बहुत विदोहन किया जिससे मृदा-अपरदन, भू-स्खलन आदि समस्याएँ उत्पन्न हो गया है। अपने आवास के लिए वनों की अंधाधुंध कटाई की जिससे वनों का विनाश हो गया है व ऑक्सीजन की कमी महसूस की जा रही है। मानवीय हस्तक्षेप से अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं।

समस्याएँ:— मानव के पर्यावरण के साथ खिलवाड़ करने से अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गयी हैं। प्रदूषण एक भयावह व असह्य समस्या है। प्राकृतिक पर्यावरण में किसी अवांछित बाह्य पदार्थ के प्रवेश को पर्यावरण प्रदूषण कहते हैं। प्रदूषण मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण व ध्वनि प्रदूषण। इस प्रदूषण की समस्या के कारण अनेक अन्य समस्याएँ भी उत्पन्न हो रही हैं। वायु

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रदूषण से ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीन हाउस प्रभाव आदि समस्याएँ उत्पन्न हो गई है। बढ़ती हुई कार्बनडाइऑक्साइड से ध्रुवीय प्रदेश की बर्फ पिघल रही है व समुद्र स्तर बढ़ रहा है। क्लोरो फ्लोरो कार्बन के अत्यधिक उपयोग के कारण ओजोन परत में छेद हो गये हैं। यह छेद सर्वप्रथम अंटार्कटिका में देखा गया थी। ओजोन परत सूर्य से निकलने वाली घातक पराबैंगनी किरणों को अवशोषित कर पृथ्वी के प्राणियों की रक्षा करती है। पराबैंगनी किरणों से कैंसर जैसी प्राणघातक बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं। अतः पर्यावरण असंतुलन के कारण अनेक समस्याओं का सामना जीव-जन्तुओं को करना पड़ रहा है।

उपसंहार :— पर्यावरण का संरक्षण करके पर्यावरण असंतुलन को पुनः संतुलित किया जा सकता है। वृक्षारोपण से पर्यावरण प्रदूषण पर नियंत्रण पाया जा सकता है। जनसंख्या वृद्धि की दर में कमी करके अनेक समस्याओं का समाधान करना चाहिए। जीव-जंतुओं की लुप्त हो रही विभिन्न प्रजातियों की रक्षा के लिए जीव मण्डल व जैव आरक्षण की स्थापना करनी चाहिए। वनों के विदोहन पर रोक लगाकर वृक्षों के कटाव पर मनाही होनी चाहिए। उपर्युक्त तरीकों से पर्यावरण को संतुलित किया जा सकता है।

B S E M P

21

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 21 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 22 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

23

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 24 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का